15 खरगोश और हाथी

खरगोश एक छोटा-सा जानवर है और हाथी बहुत बड़ा। इस कहानी में खरगोश किस प्रकार अपनी समझदारी से हाथियों से अपनी रक्षा करते हैं, इसका वर्णन है। यह कहानी 'पंचतन्त्र' से ली गई है।

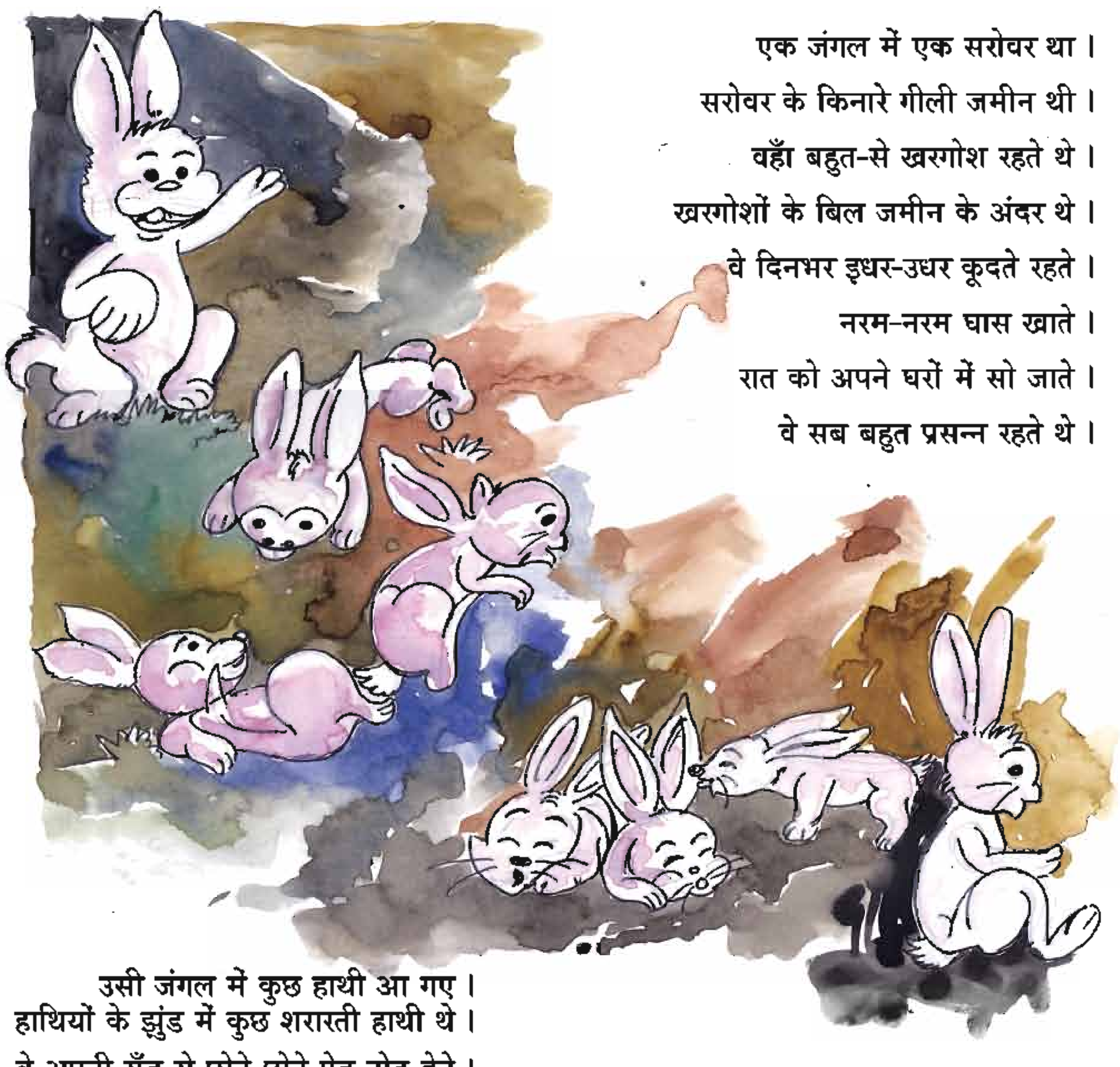

एक जंगल में एक सरोवर था।
सरोवर के किनारे गीली जमीन थी।
वहाँ बहुत-से खरगोश रहते थे।
खरगोशों के बिल जमीन के अंदर थे।
वे दिनभर इधर-उधर कूदते रहते।
नरम-नरम घास खाते।
रात को अपने घरों में सो जाते।
वे सब बहुत प्रसन्न रहते थे।

उसी जंगल में कुछ हाथी आ गए।
हाथियों के झुंड में कुछ शरारती हाथी थे।
वे अपनी सूँड़ से छोटे-छोटे पेड़ तोड़ देते।

पौधे कुचल देते। हाथियों के बच्चे खेल-खेल में एक-दूसरे से लड़ते। कभी एक छोटा हाथी नीचे होता, कभी दूसरा।

हाथी पानी से बहुत प्यार करते हैं। वे सूँड़ में पानी भर-भर कर नहाते। फिर सरोवर के किनारे मिट्टी में लोटते। नरम जमीन उनके भार से दब जाती। साथ ही कई खरगोश परिवार भी दब जाते। इससे खरगोश बहुत दु:खी थे।

खरगोशों के सरदार ने एक उपाय सोचा। कुछ चुने हुए खरगोशों के साथ वह हाथियों के सरदार के पास गया। कुछ दूरी पर बैठ खरगोशों के सरदार ने अपने अगले पाँव उठाए। उसने उन्हें हाथ जोड़ नमस्कार किया। हाथी ने सूँड़ उठाकर नमस्कार का उत्तर दिया।

खरगोश सरदार बोला, हम चाँद के भानजे हैं। चाँद में आप हमारे भाई-बंधुओं को देख सकते हैं। हमारे कुछ भाई धरती पर रहने आए हैं।

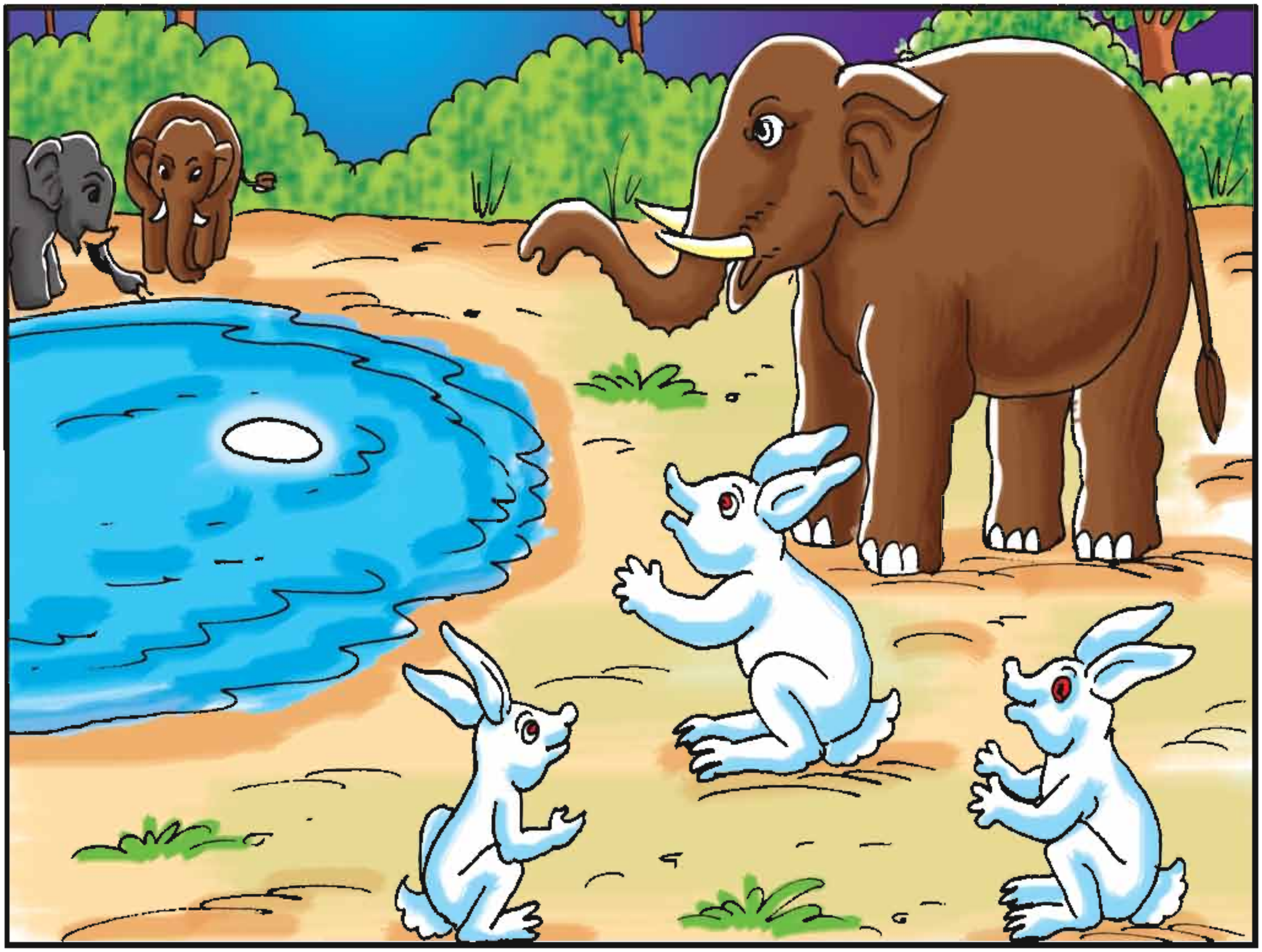

मामा रोज सरोवर में आते हैं, हमसे मिलने। वे आपसे नाराज़ हैं। हाथी बोला, "क्या ? क्यों नाराज़ हैं ? हमने क्या किया है ?"

खरगोश बोला, "सरोवर के समीप नरम मिट्टी में सुराख कर हमने अपने घर बनाए हैं। आपके आने से सुराख दब गए जिससे चंदा मामा के बहुत-से भानजे दब गए। इसलिए वे आपसे बहुत नाराज़ हैं।"

खरगोश आगे बोला, "वे रात को सरोवर में आएँगे और उन्हें यह देखकर अच्छा नहीं लगेगा।"

रात हुई। पूर्णमासी का चाँद निकला। हवा तेज थी। सरोवर में हलकी-हलकी लहरें उठ रही थीं। चाँद लहरों के साथ-साथ ऊपर-नीचे हो रहा था।

हाथी और खरगोश वहाँ पहुँच गए। खरगोश बोला, "देखिए महाराज, चंदामामा गुस्से से काँप रहे हैं। आप जल्दी यहाँ से दूर चले जाएँ। लगता है, मामा बहुत नाराज हो रहे हैं।"

हाथियों के सरदार ने अपने झुंड की तरफ देखा। सभी डर गए थे। सरदार ने अपनी सूँड़ ऊपर उठाई। सभी हाथियों ने ऐसा ही किया। अब सरदार बोला, चमकते हुए चाँद को हमारा नमस्कार। हम अपनी गलती मानते हुए आपसे क्षमा माँगते हैं। आप हमें क्षमा करें। हम अभी दूसरे जंगल में चले जाते हैं। अब ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे दूसरों को तकलीफ़ हो।

शब्दार्थ

सरोवर झील **परिवार** एक घर में रहनेवाले लोग **बंधु** भाई **कुचलना** दबाना **क्षमा** माफी **सुराख** छेद **पूर्णमासी** जिस रात चाँद गोल होता है **भानजा** बहन का लड़का **समीप** नजदीक

मुहावरे

गुस्से से काँपना क्रोधित होना

अभ्यास

1. इस कहानी में तीन चित्र दिए गए हैं। हर एक चित्र के संदर्भ में वर्णन लिखिए।

2. मुहावरों के वाक्य-प्रयोग के बारे में सही विकल्प चुनिए :

(1) **फूला न समाना** - अत्यंत खुश होना। [ ]

(क) हर्ष परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के कारण फूला न समाया।

(ख) मोनाली स्कूल में प्रथम नंबर आई इसलिए वह फूली न समाई।

(ग) सेठ पानाचंद की जायदाद लुट गई इसलिए वे फूले न समाए।

(2) **ऊँचे चढ़ना** - प्रगति करना। [ ]

(क) दीपाली अंग्रेजी विषय में दिन-प्रतिदिन ऊँचे चढ़ना चाहती है।

(ख) हितेश एक ही कक्षा में दो साल रहकर ऊँचे चढ़ना चाहता था।

(ग) बच्चे पेड़ पर ऊँचे चढ़ने का खेल खेलते हैं।

(3) **अभिवादन करना - सत्कार करना।** [ ]

(क) आयुषी ने वक्तृत्व स्पर्धा में अच्छा वक्तव्य दिया इसलिए उसके पिता दर्शनकुमार ने उसका अभिवादन किया।

(ख) तनीश आम खा रहा था इसलिए उसके मित्र ने उसका अभिवादन किया।

(ग) शिल्पा दौड़ में हार गई इसलिए उसकी मम्मी ने उसका अभिवादन किया।

3. चित्र देखकर कहानी कहो।

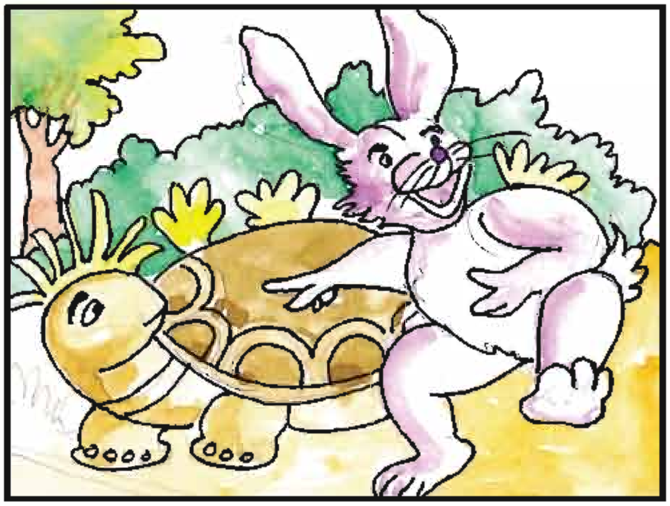

1. कछुआ और खरगोश के बीच स्पर्धा हुई।

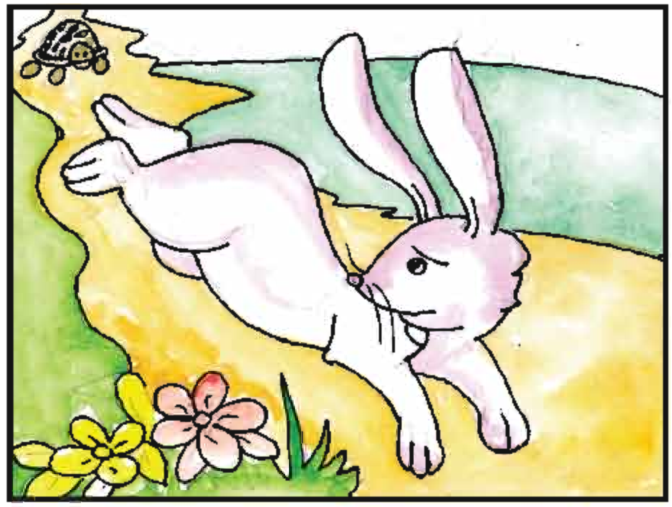

2. खरगोश तेज़ दौड़ रहा है।

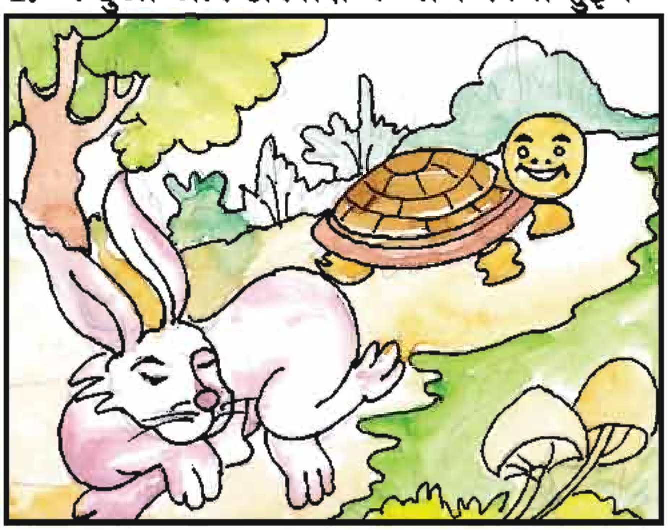

3. खरगोश सो गया।

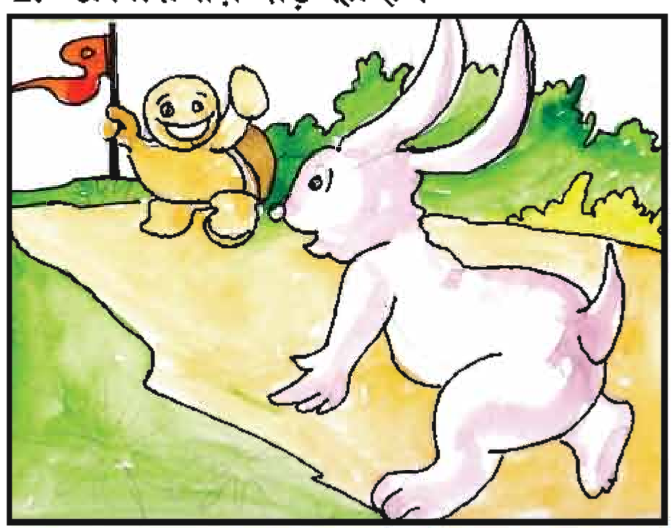

4. कछुआ जीत गया।

- इस कहानी के आधार पर अपने साथियों से पूछने के लिए प्रश्न बनाकर लिखो।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) खरगोशों के बिल कहाँ थे ?

(2) खरगोशों का सरदार क्या बोला ?

(3) पूर्णमासी का चाँद कैसा है ?

(4) तालाब में क्या दिखाई दे रहा है ?

(5) चंदामामा से माफी कौन माँग रहा है ?

2. मातृभाषा में अनुवाद कीजिए :

(1) सरोवर के किनारे गीली जमीन थी।

(2) हम चाँद के भानजे हैं।

(3) हाथियों के झुंड में कुछ शरारती हाथी थे।

(4) खरगोशों के सरदार ने एक उपाय सोचा।

3. संदर्भ पुस्तक पढ़कर पता करो और लिखो कि पूर्णमासी कब होती है और अमावस्या कब ?

योग्यता-विस्तार

पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों में से कहानियाँ पढ़कर प्रार्थना-कार्यक्रम में या कक्षा में कहिए।

पढिए और समझिए :

- समझदारी से बड़े से बड़ा कार्य हो सकता है।
- दूसरों को तकलीफ हो ? ऐसे कार्य हमें नहीं करना चाहिए।
- जल्दबाजी से कार्य सफल नहीं होते ; धीरज से कार्य सफल होते हैं।